उपसंहार

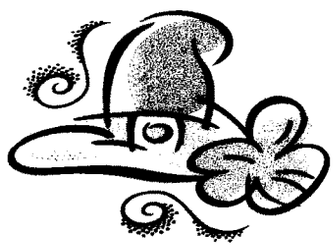

उपसंहार

हिंदी साहित्य के सभी विधाओं में नाटक विधा एक सशक्त समाज जीवन का यथार्थ रूप में चित्रण करने का माध्यम है। नाटककार अपने नाटय कृतियों में नाटक रंगमंचीयता के दवारा समाज की कई समस्याओंको पाठकों के सामने प्रस्तुत करता है। प्रस्तुत लघुशोध-प्रबंध का विषय है - "गिरिराज किशोर के नाटकों में चित्रित समस्याएँ" का अध्ययन किया है।

प्रस्तुत लघुशोध-प्रबंध के प्रथम अध्याय में गिरिराज किशोर ने विविध विधा में लेखन कार्य किया है। उन्होंने उपन्यास कहानी, नाटक विधा में अपना स्थान निर्माण किया है। नौवी कक्षा से ही उनका साहित्यिक लेखन है। बचपन में माता की छत्र-छाया उन्हें नहीं मिली। उनके परिवार के वे छठी संतान होने के कारण उनका लाड़-प्यार हुआ है। उनके वैवाहिक जीवन में उनकी पत्नी मीरा जी ने उन्हें अनेक समस्याओं में साथ दिया है। उनके नौकरी में हर बार समस्याएँ आती रही लेकिन उन्होने अपना साहित्य-लेखन कार्य कभी नही रोका। अपना लेखन उन्होंने निरंतर जारी रखा। गिरिराज किशोर जी का बार-बार नौकरी छुटना और बार-बार नौकरी पाना उनके आत्म सम्मानी और स्वाभिमानी स्वभाव का परिचय देता है। अपने जीवन में किशोर जी ने आर्थिक समस्या का सामना किया है तथा अपने आत्मसम्मानी स्वभाव के कारण उन्हें कई बार नौकरी छोड़नी पड़ी है।

संक्षेप में गिरिराज किशोर जी जीवन में आदर्शवादी और लेखन में यथार्थ वादी है। उन्होंने अपने हर विधा में अपने समाज में जो स्थित आम व्यक्ति को पीड़ित करनेवाली समस्याओं को चित्रित किया है।

प्रस्तुत अध्याय द्वितीय में मानवीय संवेदनाओं के गहन तथा मार्मिक सृजनकार नाटककार गिरिराज किशोर के 'नरमेध', 'प्रजा ही रहने दो', 'घास और घोड़ा', 'चेहरे -चेहरे किसके चेहरे', 'केवल मेरा नाम लो', 'जुर्म आयद' और 'काठ की तोप' इन विवेच्य नाटकों का कथ्य समाज जीवन से जुड़ा हुआ है। इन नाटकों का कथ्य मानवतावादी मूल्यों से निहीत है। प्रस्तुत नाटकों के कथ्य में मानव जीवन की यथार्थता को बड़ी गहराई के साथ चित्रित किया है। प्रस्तुत नाटकों का विवेचन करने के पश्चात् स्पष्ट होता है कि 'जुर्म आयद' तथा 'घास और घोड़ा' यह दो नाटक सामाजिक समस्याओं को उदघाटित करते हैं। प्रस्तुत नाटकों में भारतीय समाज-व्यवस्था की जाति-व्यवस्था, नारी-शोषण, गरीबी आदि समस्याओं को स्पष्ट किया गया है। 'नरमेध' नाटक मानसिक पीडा से पीड़ित नारी तथा पारिवारिक समस्या पर आधारित है। इसमें असफल प्रेम और नारी की मानसिक स्थिति को गहराई के साथ चित्रित किया गया है। 'प्रजा ही रहने दो' पौराणिक नाटक है। इसमें युद्ध के समस्या की भीषणता को स्पष्ट किया है। 'चेहरे-चेहरे किसके चेहरे' व्यंग्य नाटक है। इसमें गिरिराज किशोर ने भ्रष्ट राजनीति, खोखले, दिखावटी आचार-विचारों का पर्दाफाश किया है। साथ ही मध्यवर्गीय लोगों के शोषण को स्पष्ट किया है। 'केवल मेरा नाम लो' यह नाटक मानसिक पीडा से पीड़ित तथा कुंठित भावना से ग्रस्त व्यक्ति पर आधारित है। 'काठ की तोप' राजनीतिक नाटक है। इसमें पारिवारिक अलगाव, स्वार्थी वृत्ति, शोषण वृत्ति, लोभ के कारण स्वयं तथा दूसरों के अहितता को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया गया है।

अत: प्रस्तुत अध्याय 'गिरिराज किशोर' के नाटकों का सामान्य परिचय' का अध्ययन करने के पश्चात् हम इस नतीजे पर पहुँचते है कि विवेच्य नाटक समाजाभिमूकता की दृष्टि से बींसवीं शताब्दी के मानवीय जीवन में स्थित कई समस्याओं को उदघाटित करते हैं। भाषा, पात्र, उद्देश्य की दृष्टि से विवेच्या नाटक मौलिक कृतियों में अपना स्थान अग्रक्रम पर लिए हुए है। गिरिराज किशोर ने मानवीय पीड़ा की

सूक्ष्म, व्यापक एवं वैविध्यपूर्ण परिवर्तनवादी विचारधारा की माँग प्रस्तुत नाटकों के कथ्य में दर्शायी है और पाठकों के मन-मस्तिष्क को प्रेरित किया है कि मानव-मानव बना रहें और सृष्टि में एक-दूसरे के प्रति सहृदयी भावनाओं को संजोये रख्खे

गिरिराज किशोर के विवेच्य नाटक समाज जीवन का यथार्थ एवं सजीव चित्रण ही नहीं करते बल्कि मानव की सोयी हुई अस्मिता को जागृत कर उसकी दिशाहीन मानसिकता को सही राह पर लाने का अथक प्रयास करते हैं। किशोर जी ने विवेच्य नाटकों के केंद्र में व्यक्ति, समाज और प्रकृति को रखकर ने उनकी महत्ता को स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

गिरिराज किशोर के विवेच्य नाटकों के कथ्य में निहित तथ्य का अवलोकन करने के पश्चात् मैं इस निष्कर्ष तक पहुँचा हूँ कि गिरिराज किशोर के विवेच्य नाटकों का मूल स्वर मानव जीवन से संबंधित 'समस्या' हैं।

प्रस्तुत अध्याय तृतीय में मनुष्य जन्म से लेकर अंत तक किसी-न-किसी समस्या में फँसता रहता है लेकिन उस समस्या का सामना करके अपनी मंझिल पाने की कोशिश जारी रखता है। 'समस्या' के कारण मनुष्य क्रियाशील बन जाता है। गिरिराज किशोर ने अपने नाट्य कृति के माध्यम से समाज में व्याप्त समस्याओं को स्पष्ट किया है। वे इस प्रकार हैं -

पहली समस्या है-'आर्थिक समस्या' इससे यह स्पष्ट किया गया है कि इन्सान को अपना जीवन यापन करते समय उसके पास 'अर्थ' का होना महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि अर्थ की समस्या के कारण ही अनेक समस्याएँ निर्माण होती है। अर्थ न होने के कारण वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति भी ठिक तरह से नहीं कर पाता है। परिणामत: अभावग्रस्त जीवन जीना पडता है।

दुसरी समस्या 'सामाजीक समस्या'से स्पष्ट होता है कि मनुष्य जिस समाज में रहता है उस समाज में स्थित समस्याओं का सामना करके उसे आगे निकलना पड़ता

है। समाज में अनेक प्रकार की समस्याएँ होती हैं। 'अंधे कानून की समस्या' से यह स्पष्ट होता है कि कानून मनुष्य की समस्याओं को नहीं बल्कि सिर्फ उसकी गुनाह को देखता है। इसलिए कभी-कभी गुनहगार को छोड़कर सामान्य व्यक्ति पर जुर्म साबित किया जाताहै।

'घटती मानवीयता की समस्या' से यह स्पष्ट होता है कि इन्सान; होकर भी मानवीयमूल्यों को तिलांजली दे रहा है और अपनी मंझिल पाने के लिए रिश्ते-नाते भूल रहा है। 'जंगल तोड़ की समस्या' में स्पष्ट लिखा गया है कि आज मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जंगल को तोड़ रहा है जिसका परिणाम सारी सृष्टि को भुगतना पड़ रहा है। बारीश बरसना बंद हो गया है। इसलिए अकाल, बाढ़ इन समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

'बढती स्वार्थी वृत्ति की समस्या' से स्पष्ट होता है, कि मनुष्य अपनी मंझिल पाने के लिए गलत रास्तों को अपना रहा है। वह इस समस्या में इतना फँसा हुआ है कि रिश्ते-नाते तक भूल गया है। 'भीषण युद्ध की समस्या' से स्पष्ट किया गया है कि युद्ध की समस्या ने पूरी तरह से देश को घेर रख्खा है। अपना अस्तित्व हमेशा बनाए रखने के लिए एक देश दूसरें दो देशों को आपस में लढ़ाने का प्रयास कर रहा है। जिससे मनुष्य का जीना मुश्किल हो गया है। 'समाज में बढ़ते गैर कानूनी कार्य करने की समस्या' से स्पष्ट होता है कि मनुष्य गलत रासों को अपनाकर अपनी इच्छित मंझिल पाने की कोशिश कर रहा है। अपने अधिकारों का गलत इस्तेमाल करके सामान्य लोगों का जीना मुश्किल कर रहा है।

'अनैतिक संबंधों की समस्या' से स्पष्ट होता है कि मनुष्य अपनी कुंठित वासनाओं में फँसा हुआ है। इसलिए मनुष्य अपने अनैतिक संबधों के आड़ आनेवाले रिश्ते-नातों का कत्ल करने पर भी तुला हुआ है। 'आत्मसम्मान की समस्या' से स्पष्ट होता है कि हर मनुष्य को अपना एक अलग स्थान तथा आत्मसम्मान होता है। लेकिन जब

उसके आत्मसम्मान को ठेस पहुँचती है तब वह अपने आप पर काबू नहीं रख पाता है। 'प्रतिशोध की समस्या' से स्पष्ट होता है कि मनुष्य स्वयं पर हुए अत्याचारों का विद्रोह करते हुए प्रतिशोध की समस्या में फँस जाता है। जिसमें दूसरों का अहित करने का प्रयास करता है। यहाँ तक भी वह रिश्ते-नाते भी भूल जाता है।

'समाज में बढ़ता खोखलापन या दिखावटीपन की समस्या' से स्पष्ट होता है कि मनुष्य समाज में अपना महत्त्व बढ़ाने के लिए तथा अपना स्थान हमेशा ऊँचा बनाए रखने के लिए दिखावटीपन की समस्या में उलझता जा रहा है। अपनी औकाद से ज्यादा खर्च करने के कारण इस समस्या के परिणामों को उसे भुगतना पड़ रहा है।' पूरानी और नई पीढ़ी के बीच संघर्ष की समस्या' से स्पष्ट होता है कि आधुनिकता के कारण पूरानी और नई पीढ़ी के विचारों में दरार पैदा होने के कारण संघर्ष निर्माण हुआ है। इसलिए वे दोनों एक-दूसरे से दूर होते जा रहे हैं। 'चापलुसी की समस्या' से स्पष्ट होता है कि है मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए दूसरों की चापलुसी कर रहा है। इस समस्या के कारण मनुष्य अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए दूसरों का अहित करने पर तुला हुआ है। 'शोषण की समस्या' से स्पष्ट होता है कि अपने अधिकारों का गलत इस्तेमाल करके मनुष्य सामान्य लोगों पर अत्याचार कर रहा है। 'जातिभेद की समस्या' से स्पष्ट होता है कि देश एक तरफ वैज्ञानिक युग में तरक्की तो कर रहा है। लेकिन दूसरी तरफ जाति-पाँती के भेद के कारण मनुष्य-मनुष्य का कत्ल कर रहा है। जिसमें वह आंतरजातीय विवाह का विरोध कर रहा है।

इन समस्याओं के बाद तिसरी समस्या है 'राजनीतिक समस्या'। इस समस्या से स्पष्ट होता है कि मनुष्य-मनुष्य में, राज्यों-राज्यों में, देशों-देशों में संघर्ष निर्माण हुआ है। अपनी सत्ता का स्थान बनाए रखने के लिए मनुष्य 'राजनीतिक समस्या' में उलझा हुआ है। इस समस्या के कारण दूसरी समस्याएँ निर्माण हो गई है। जिसमें

'कुटनीति और धोखेबाजी की समस्या' है। इस समस्या से स्पष्ट होता है कि 'मनुष्य अपने अधिकारों के बलबुतों पर कुटनीति को अपनाकर धोखेबाजी कर रहा है।

'समाज में बढ़ता भ्रष्टाचार' इस समस्या से स्पष्ट होता गया है कि मनुष्य अपने मक्सद में कामयाब होने के लिए भ्रष्टाचार कर रहा है। जिस कारण समाज का विकास नहीं हो रहा है। आम व्यक्ति को न्याय मिलना मुश्किल हो गया है। 'रिश्वत खोरी की समस्या' से स्पष्ट होता है कि मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पर्ति के लिए इस समस्या में उलझता जा रहा है। जिस कारण बेगुनाह को सजा दी जाती है और गुनहगार को खुले आम छोड़ दिया जाता है।

चौथी समस्या है 'पारिवारिक समस्या'। आज यह समस्या प्रमुख रूप धारण कर रही है। विचारों में अंतर होने के कारण पारिवारिक विघटन हो रहा है। इस समस्या के कारण अनेक समस्याएँ पैदा हो गई हैं। 'टूटते पारिवारिक संबंधों की समस्या' से स्पष्ट होता है कि आधुनिक विचार तथा पूराने विचारों का मिलाप न होने के कारण परिवार में संघर्ष निर्माण होने लगें हैं जिससे मनुष्य अपने आप को परिवार से अलग मानकर परिवार से दूर होता जा रहा है। 'बदलते रिश्तों की समस्या' से स्पष्ट होता है कि मनुष्य अपना स्थान बनाए रखने के लिए रिश्ते-नाते भूल रहा है तथा विचारों में दरार निर्माण होने के कारण यह समस्या बढ़ती ही जा रही है।

'माता-पुत्र के टूटते संबंध की समस्या' से स्पष्ट होता है कि अपने पूराने विचार अपने बेटे पर लादने का प्रयास करने के कारण तथा विचारों में संघर्ष होने के कारण माता-पुत्र के संबंध बिघड़ते जा रहे हैं। 'पति-पत्नी के टूटते संबंध की समस्या' से स्पष्ट होता है कि अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक-दूसरे पर अत्याचार करने के कारण पति-पत्नी के संबंधों की समस्या दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है।

'वृदध लोगों की समस्या' से स्पष्ट होता है कि मनुष्य के जीवन में बचपन तथा बुढ़ापा आना स्वाभाविक है। इन दोनों में एक ही साम्य है वह है दूसरों का सहारा

पाना। इसके बिना उनको अपना जीवन यापन करना मुश्किल हो जाता है। वृद्ध लोगों का आधार उनकी संतान होती है। अगर उनके सामने ही उनके संतान की मृत्यु होती है तो वे बेसहारा हो जाते हैं।

'विवाह की समस्या' से स्पष्ट होता है कि यह भी एक महत्त्वपूर्ण समस्या बन रही है। इस समस्या में अनेक समस्याएँ है जिनमें से 'प्रेम विवाह की समस्या' से स्पष्ट होता है कि मनुष्य प्रेम विवाह में जाती-पाँती नहीं देखता। लेकिन समाज का विरोध कि होने के कारण उसे कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। 'अनमेल विवाह की समस्या' से स्पष्ट होता है कि जिस विवाह का मेल नहीं हो पाता वह अनमेल विवाह होता है। जिसमें एक ही नारी को पाँच-पाँच पुरुषों के साथ शादी करनी पड़ती है। इस अनमेल विवाह के कारण उस नारी को जीवन यापन करना मुश्किल हो जाता है।

'दहेज की समस्या' से स्पष्ट होता है कि मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए 'दहेज की समस्या' में फँसता गया है। शादी का रिश्ता पक्का करने के लिए वह दिखावटीपन भी कर रहा है।'आत्महत्या की समस्या' से स्पष्ट होता है कि मनुष्य खुद को असाहय मानकर खुदखुशी करने पर तुला है। वह समस्याओं का सामना करते-करते थककर यह गलत मार्ग अपनाता हैं। 'अंधविश्वास की समस्या' से स्पष्ट होता है कि समाज को विकास को रोकने का काम यह समस्या करती है। जिसमें पूराने विचारों का प्रभाव होने के कारण मनुष्य अकेलेपन से घबरा जाता है।

छठ़ी समस्या 'मनोवैज्ञानिक समस्या' इस समस्या से स्पष्ट होता है कि मनुष्य पर हुए अत्याचार के कारण वह मानसिक दृष्टि से कमजोर बन जाता है। इस समस्या के कारण अनेक समस्याएँ आती है। जिसमें से 'चंचल वृत्ति की समस्या' से स्पष्ट होता है कि अपने आप पर विश्वास न होने के कारण अपने विचारों में चंचलता पैदा होती है। जिससे दूसरें परिणामों को भुगतना पड़ता है।'कुंठित वासना की समस्या' से स्पष्ट होता है कि 'मनुष्य अपने अंदर छिपी हुई किसी कुंठित वासना' के कारण नारी को

अपनी हवस का शिकार बनाने के लिए उस पर अत्याचार करता है। इस समस्या के कारण वह रिश्ते-नाते भी भूल जाता है।'आराजक वृत्ति की समस्या' से स्पष्ट होता है कि अपना स्थान निर्माण करने के लिए मनुष्य योग्य विचारों को ठुकराकर गलत विचारों को अपनाता है। परिणामत: उसके परिणाम उसे स्वयं भुगतने पड़ते हैं।

संक्षेप मे कहा जा सकता है कि नाटककार गिरिराज किशोर ने अपनी नाट्य कृतियों में हर समस्या का बड़ी बखुबी से चित्रण किया है।

प्रस्तुत अध्याय चतुर्थ में प्राचिन काल से लेकर आज तक नारी को हर समस्या का सामना करना पड़ा है। कानून ने स्त्री-पुरुष को समान अधिकार दिएँ हैं फिर भी नारी पर अत्याचार हो रहे हैं। उन समस्याओं को नाटककार गिरिराज किशोर ने अपने नाटकों में बड़ी गहराई के साथ चित्रित किया है।

'परिवार से पीड़ित नारी की समस्या' में स्पष्ट होता है कि नारी का आधार उसका परिवार होता है। नारी उस परिवार का सदस्य होती है। लेकिन वही परिवार जब उसे मूल्यहीन तथा महत्त्वहीन समझता है तब वह नारी उस परिवार से पीड़ित हो जाती है। गिरिराज किशोर के नाटकों में माता, बहू, बेटी और पत्नी जैसे परिवार के केंद्रीय घटक नारी होकर भी अपने ही परिवार के पति, बेटे, ससुर और पिता से पीड़ित है।

'चंचल वृत्ति के नारी की समस्या' से स्पष्ट होता है कि कुछ नारीयाँ अपने विचारों पर सही तरह कब्जा नहीं रख पाती है। परिणामत: उनके विचारों में चंचलता दिखाई देती हैं। 'असाह्य नारी की समस्या' से स्पष्ट होता है कि नारी को प्राचीन काल में केवल एक भोग्या तथा उपभोग की वस्तु माना गया था। उसे किसी मूल्यहीन वस्तु का स्थान दिया गया था। आज के वर्तमान परिवेश में भी उस पर अत्याचार हो रहें है और आज भी वह असाह्य है।'स्वाभिमानी नारी की समस्या' से स्पष्ट होता है कि मनुष्य सबसे ज्यादा महत्त्व अपने स्वाभिमान को देता है। कई बार उसे स्वाभिमान के कारण कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है।नारी स्वाभिमान के लिए जान भी दे सकती है।

'अभावग्रस्त नारी की समस्या' से स्पष्ट होता है कि गरीबी के कारण नारी को कई समस्या ओं का सामना करना पड़ता है। गरीबी के कारण नारी को घर संभालना मुश्किल हो जाता है। परिणामत: उसके घर में अभावग्रस्तता दिखाई देती है।

'पुलिस से पीड़ित नारी की समस्या' से स्पष्ट होता है कि समाज की रक्षा पुलिस करती है। लेकिन वही पुलिस अपने अधिकारों का गलत इस्तेमाल जब नारी पर करती है तब नारी पीड़ित हो जाती है। 'आश्रीत नारी की समस्या' से स्पष्ट होता है कि प्राचीन काल से लेकर आज तक नारी पुरुष सत्ता के अधिन तथा आश्रीत रही है। इसी कारण वह चुपचाप अत्याचार सहती जा रही है। 'बदनामी से पीड़ित नारी की समस्या' से स्पष्ट होता है कि मनुष्य को समाज में प्रतिष्ठित दिखाने का काम उसकी इज्जत करती है। नारी जब समाज से बदनाम हो जाती है तो उसका जीना मुश्किल हो जाता है।

'पिता से पीड़ित नारी की समस्या' से स्पष्ट होता है कि पिता ही जब अपनी बेटी को अपनी वासना का शिकार बनाने कोशिश करता है। तब उस बेटी की जीने की चाह तथा उम्मीद ही खत्म होती है। 'पति से पीड़ित नारी की समस्या' से स्पष्ट होता है कि प्राचिन काल से लेकर आज तक नारी पति परायण होने के कारण पति के अत्याचार चुपचाप सहती आ रही है। 'राजनीति से पीड़ित नारी की समस्या' से स्पष्ट होता है कि प्राचीन काल में नारी को उपभोग की वस्तु माना गया था। इसलिए उसे राजनीति में किसी वस्तु की तरह गया किया गया था। 'वृद्ध नारी की समस्या' में स्पष्ट होता है कि वृद्ध नारी का आधार उसकी संतान होती है। लेकिन उसी संतान की मौत उसके सामने जब हो जाती है तो उस वृद्ध नारी का जीवन आधारहीन बन जाता है। 'नारी शिक्षा की समस्या' से स्पष्ट होता है कि आज भी शिक्षित नारी की मात्रा कम है और शिक्षा न लेने के कारण उसे कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। 'भयभीत नारी की समस्या' से स्पष्ट होता है कि उस पर निरंतर किए गए अत्याचार के कारण वह डर को मन में लेकर जीती रहती है।'मानसिक पीड़ित नारी की समस्या' से

स्पष्ट होता है कि नारी स्वंय को अपने परिवार का मुख्य सदस्य मानकर परिवार की देखभाल करने में व्यस्त रहती है। लेकिन परिवार के सदस्य अगर उसे बदनाम तथा उसपर अत्याचार करें तो उस नारी की मानसिक स्थिति से बिगड़ जाती है।

'अस्तित्वहीन नारी की समस्या' से स्पष्ट होता है कि प्राचीन काल में नारी को खुद का निर्णय स्वयं लेने का अधिकार नहीं था। उसे मूल्यहीन वस्तु की तरह माना गया था इसलिए उसका अपना अलग अस्तित्व नहीं था। 'अपमानित नारी की समस्या' से स्पष्ट होता है कि नारी को अपने जीवन में जन्म से लेकर मृत्यु तक पुरुष की तुलना में अनेक बार अपमानित जीवन जीना पड़ता है। 'लैंगिक समस्या से पीड़ित नारी की समस्या' से स्पष्ट होता है कि आज के वर्तमान युग में लैंगिक समस्या प्रमुख बन गई है और वह इसका शिकार बन रही है। 'मर्यादाओं में दबी नारी की समस्या' से स्पष्ट होता है कि नारी आज भी अपनी मर्यादाओं में रह रही है। वह उस पर होनेवाले अत्याचारों को सहती रहती है। मर्यादाओं की समस्या के कारण वह अपनी पहचान नहीं बना पाई है। 'पुत्रशोक से पीड़ित नारी की समस्या' से स्पष्ट होता है कि नारी को अपनी औलाद प्यारी होती है। उसके लिए वह किसी भी समस्या का सामना करने के लिए तैयार हो जाती है। लेकिन उसी औलाद की जब उसके सामने ही मौत हो जाती है तो उसका जीवन दुखमय बन जाता है।

'पश्चाताप से पीड़ित नारी की समस्या' से स्पष्ट होता है कि नारी जाने-अनजाने में गलत कार्य कर बैठती है। लेकिन अंत में वह पश्चाताप करने लगती है।नारी अपनी मजबूरी के कारण कुछ ऐसे काम करती है जिस कारण वह पश्चाताप से पीड़ित हो जाती है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि नाटककार गिरिराज किशोर ने अपने नाटकों के माध्यम से नारी की अनेक समस्या ओं उद्घाटन किया है। नारी के आंतरिक और बाहय दोनों प्रकार के समस्या ओं का चित्रण करने में किशोर हुए हैं।

प्रस्तुत पंचम अध्याय में साहित्यिक विधाओं में नाटक विधा एक सक्षम विधा है। नाटक के शिल्प में मंचीयता एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व की भाँति दैदिप्यमान है। गिरिराज किशोर ने समाज की यथार्थता का अवलोकन कर के नाटक के माध्यम से पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया है। 'मंचीयता' नाटक का एक ऐसा पहलू है जो नाटक में सजीवता लाकर कथ्य को स्पष्ट करती है। इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात् मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि 'नरमेध', 'प्रजा ही रहने दो', 'घास और घोड़ा', 'चेहरे-चेहरे किसके चेहरे', 'केवल मेरा नाम लो', 'जुर्म आयद' और 'काठ की तोप' किशोर जी के प्रस्तुत नाटक मंचीयता की दृष्टि से सफल नाटक हैं।

'नरमेध' और 'केवल मेरा नाम लो' इस नाटक में संगीत-योजना कम है। 'दृश्य सज्जा' से स्पष्ट होता है कि किशोर जी के नाटकों में कामचलाऊँ दृश्य साधन हैं जो कहीं से भी आसानी से प्राप्त हो सकते हैं।

'अभिनय' से स्पष्ट होता है कि सभी नाटक अभिनय की दृष्टि से योग्य हैं। उसमें संवाद-योजना, पात्र-योजना तथा अभिनय (अंगिक, वाचिक, सात्विक और आहार्य) की दृष्टि से सफल हुए हैं।

'वेशभूषा' से स्पष्ट होता है कि 'प्रजा ही रहने दो' यह नाटक पौराणिक होने के कारण इस नाटक की सफलता वेशभूषा पर ही आधारित है। सभी नाटकों में वेशभूषा पात्रानुकूल है। प्रकाश-योजना से स्पष्ट होता है कि किशोर जी ने प्रकाश योजना के माध्यम से नाटक में वातावरण निर्मिति की है। 'ध्वनि संकेत' से स्पष्ट होता है कि किशोर जी के नाटकों में ध्वनि संकेत का ज्यादा उपयोग 'प्रजा ही रहने दो' इस नाटक में हुआ है।

संक्षेप में कहा जाता है कि किशोर जी के नाटक मंचीयता की दृष्टि से पूर्णत: सफल हैं।

उपलब्धियाँ :

'गिरिराज किशोर के नाटकों में चित्रित समस्याएँ' इस विषय पर अध्ययन करने के पश्चात् निम्न तथ्य सामने आते हैं...

1 गिरिराज किशोर के नाटक मानवीय समाज जीवन का दर्पण हैं।

2 गिरिराज किशोर के नाटकों के पात्र शोषित जनता का प्रतिनिधित्व करते हैं।

3 गिरिराज किशोर के नाटक भ्रष्ट राजनीति तथा अंधे कानून पर कड़ा प्रहार करते हैं।

4 गिरिराज किशोर के नाटकों मुल स्वर समस्या है।

5 गिरिराज किशोर के नारी पात्र समाज की हर नारी का दर्द, पीड़ा, यातना को स्पष्ट करती हैं।

6 गिरिराज किशोर ने विवेच्य नाटकों के माध्यम से स्त्री-पुरुष समानता की माँग की है।

7 गिरिराज किशोर के नाटक मध्यमवर्गीय जीवन का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करते हैं।

8 गिरिराज किशोर के नाटक समाज जीवन की समस्याओं को स्पष्ट करते हैं।

9 गिरिराज किशोर के नाटकों का उद्देश्य अमीर-गरीब, जाति-पाँती, स्त्री-पुरुष बीच की खाई को पाटना है।

10 किशोर जी के नाटकों के पात्र समाजिक न्याय अधिकारों की मॉग करते हैं।

अध्ययन की नई दिशाएँ :

1 गिरिराज किशोर के नाटकों में आधुनिकता

2 गिरिराज किशोर के नाटकों में स्त्री-पुरुष संबंध

3 गिरिराज किशोर के नाटकों में चित्रित नारी जीवन

4 मंचीयता की दृष्टि से गिरिराज किशोर के नाटक

5 गिरिराज किशोर के नाटकों में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन